Total No. of Questions - 3] [Total Pages : 4

(2062)

9710

M.A. Examination

HINDI

(आधुनिक हिन्दी नाटक एवं उपन्यास)

Paper–III

(Semester–I)

Time : Three Hours] [Max. Marks : Reg. : 80, Pvt. : 100

परीक्षार्थी अपने उत्तरों को दी गयी उत्तर-पुस्तिका (40 पृष्ठ) तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त पृष्ठ जारी नहीं किया जाएगा।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रंसग व्याख्या लिखिए :

(क) यदि यह विश्व इन्द्रजाल ही है, तो उस इन्द्रजाली की अनन्त इच्छा को पूर्ण करने का साधन-यह मधुर मोह चिरजीवी हो और अभिलाषा से मचलने वाले भूखे हृदय को आहार मिले।

अथवा

जीवन के अन्तिम दृश्य को जानते हुए, अपनी आँखों से देखना, जीवन रहस्य के चरम सौन्दर्य की नग्न और भयानक वास्तविकता का अनुभव केवल सच्चे वीर हृदय को होता है। ध्वंसमयी महामाया प्रकृति का वह निरंतर संगीत है। उसे सुनने के लिए हृदय में साहस और बल एकत्र करो।

(ख) स्त्री पृथ्वी की भांति धैर्यवान है, शक्ति-सम्पन्न है, सहिष्णु है। पुरुष में नारी के गुण आ जाते हैं तो वह महात्मा बन जाता है। नारी में पुरुष के गुण आ जाते हैं तो वह कुलटा हो जाती है। पुरुष आकर्षित होता है स्त्री की ओर, जो सर्वांस में स्त्री है।

अथवा

अगर हमारी देवियाँ सृष्टि और पालन के देव मन्दिर से हिंसा और कलह के दानव क्षेत्र में आना चाहती हैं, तो उससे समाज का कल्याण न होगा। मैं इस विषय में दृढ़ हूँ। पुरुष ने अपने अभियान में अपनी दानव कीर्ति को अधिक महत्त्व दिया। वह अपने भाई का स्वत्व छीन कर और उसका रक्त बहाकर समझने लगा, उसने बहुत बड़ी विजय पाई।

(ग) किसी माने में नहीं। मैं इस घर में एक रबड़-स्टैंप भी नहीं, सिर्फ एक रबड़ का टुकड़ा—बार-बार घिसा जाने वाला रबड़ का टुकड़ा। इसके बाद क्या कोई मुझे वजह बता सकता है, एक भी ऐसी वजह, कि क्यों मुझे रहना चाहिए इस घर में?

अथवा

देखा है कि जिस मुट्ठी में तुम कितना कुछ एक साथ भर लेना चाहती थी, उसमें जो था वह भी धीरे-धीरे बाहर फिसलता गया है कि तुम्हारे मन में लगातार एक डर समाता गया है, जिसके मारे कभी तुम घर का दामन थामती रही हो, कभी बाहर का और कि वह डर एक दहशत में बदल गया।

(घ) यहाँ गड्ढों और तालाबों में कमल के पत्ते भरे रहते हैं। कहते हैं फूलों के मौसम में छोटी-छोटी गड्ढियाँ भी किस्म-किस्म के कमल और कमलिनीयों से भर जाती हैं।..... लेकिन यहाँ के लोगों को तुम लोटस ईटर्स नहीं कह सकती हो। गड्ढों की परीक्षा कर रहा हूँ।..... यहाँ की धरती बारहों महीने भीगी रहती है शायद।

अथवा

महँगी पड़े या अकाल हो, पर्व-त्योहार तो मनाना ही होगा। और होली? फागुन महीने की हवा बावरी होती है। आसिन-कातिक के मलेरिया और कालाआजार से टूटे हुए शरीर में फागुन की हवा संजीवनी फूँक देती है। रोने-कराहने के लिए बाकी ग्यारह महीने तो हैं ही, फागुन भर तो हँस लो, गा लो। 8×4=32

(9×4=36)

2. किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(क) 'मैला आँचल' का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'मैला आँचल' के उपन्यास शिल्प की समीक्षा कीजिए।

(ग) 'गोदान' उपन्यास एक कृषक की व्यथा-कथा है, सिद्ध कीजिए।

(घ) 'गोदान' की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

(ङ) 'आधे-अधूरे' नाटक का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

(च) 'आधे-अधूरे' नाटक के आधार पर महेन्द्रनाथ का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(छ) 'स्कन्दगुप्त' नाटक की नाटकीयता की समीक्षा कीजिए।

(ज) 'स्कन्दगुप्त' नाटक का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। 4×10=40

(4×12=48)

3. सभी प्रश्नों के अति संक्षिप्त उत्तर दीजिए :

(क) होरी के चरित्र की **दो** विशेषताएँ लिखिए।

(ख) 'गोदान' नामकरण की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

(ग) 'स्कन्दगुप्त' इतिहास के किस काल की घटना पर आधारित है?

(घ) 'मैला आँचल' उपन्यास का प्रकाशन वर्ष कौन-सा है?

(ङ) 'आधे-अधूरे' नाटक के आधार पर सावित्री के चरित्र की **दो** विशेषताएँ बताइए।

(च) 'आधे-अधूरे' नाटक के नामकरण का औचित्य सिद्ध कीजिए।

(छ) 'गोदान' के आधार पर गोबर की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

(ज) 'मैला आँचल' उपन्यास में किस क्षेत्र की समस्या को आधार बनाया गया है? 8×1=8

(8×2=16)